International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 112-115

# बहुसांस्कृतिक शिक्षा की अवधारणा एवं छात्र अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

**शिवांगी**
एम.फिल. शोधार्थी, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

**सारांश**
बहुसांस्कृतिकता भारतीय समाज की वस्तुनिष्ठ सच्चाई है और यह बहुसांस्कृतिकता भारतीय समाज में जाति, धर्म, जीवन–शैली, मूल्यों, रीति–रिवाज, पहनावें एवं भाषाई विविधता के रूप में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। समाज में उपलब्ध इस बहुसांस्कृतिकता की छाप इसकी विभिन्न संस्थाओं में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है हमारे शैक्षिक संस्थान भी इसका अपवाद नही है, आज हमें सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक व भाषाई रूप से भिन्न समूह विद्यालयों एवं कक्षाओं में दिखाई देते हैं। यह सांस्कृतिक विविधता शैक्षिक प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि संस्कृति व्यक्ति के ज्ञान, ज्ञान को अर्जित करने के रास्तों एवं उस ज्ञान को पाकर उसे कौन सी भूमिका निभानी है को स्पष्ट रूप से प्रभावित करती है। बहुत से विद्वान जैसे डेलपिट, बैंक व हॅर्नानडेज शिक्षा व सासंस्कृतिक विविधता के बीच गहरा संबध देखते है एंव शिक्षा को छात्रों के परिवेश से जोडने के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा को एक उपाय के रूप में सुझाते हैं। ऐसी स्थिति में भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा व संस्कृति के संबंध को समझना बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जहाँ एक और संस्कृति पर शिक्षा का प्रभाव पडता है वहीं दूसरी और शिक्षा के माध्यम से संस्कृति को हस्तांतरित किया जाता है। शिक्षा में सांस्कृतिक विविधता के इस महत्तव को देखते हुए इस अध्ययन में बहुसांस्कृतिकता के प्रति छात्र–अध्यापकों व अध्यापिकाओं के दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया। इस अध्ययन को करने के पश्चात निश्कर्ष रूप में पाया गया कि सभी छात्र अध्यापक व अध्यापिका बहुसांस्कृतिक शिक्षा को एक संसाधन के रूप में देखते हैं न की बाधा के रूप में। हालांकि इस विचार की व्यवहारिकता को लेकर वे कुछ आशंकित हैं क्योंकि भारत जैसे जटिल विविधताओं वाले देश में बहुसांस्कृतिकता कि अवधारणा को समझना एवं इस पर कार्य करना आसान नहीं है।

**मूल शब्द:** बहुसांस्कृतिकता, जटिल विविधताओं

## प्रस्तावना
बहुसांस्कृतिकता या सांस्कृतिक विविधता भारतीय समाज की वस्तुनिष्ठ सच्चाई है और यह बहुसांस्कृतिकता भाषा, रीति–रिवाज़, मूल्यों, संख्या, पहनावें व खान–पान के रूप में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। रेवा जोशी भारत में विद्यमान इस विस्तृत विविधता को रोजमर्रा के जीवन का अंग मानती है एवं इसे 'सहभागी बहुलवाद' के आदर्श पर आधारित पाती है। 'सहभागी बहुलवाद' से उनका तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें सामाजिक न्याय के लक्ष्य को ध्यान में रखकर, पदानुक्रम को तोड़ते हुए, विवधता बनाये रखने की बात की जाती है। इस तरह का बहुसांस्कृतिवाद विभिन्न समूहों के बीच दूरी कम करने की बात करता है, जिसके लिए कठिन प्रयासों के साथ–साथ दूसरों की अस्मिता का सम्मान करने की आवश्यकता होती है। (जोशी और जिरहा 2009, पृष्ठ 426)[8] भारतीय समाज में उपलब्ध इस सांस्कृतिक विविधता एवं बहुलवाद की छाप इसकी विभिन्न संस्थाओं पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है, हमारी शैक्षिक संस्थाएँ भी इसका अपवाद नहीं है, आज हमें सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से भिन्न–भिन्न समूह विद्यालयों एवं कक्षाओं में दिखाई देते हैं। यह सांस्कृतिक विविधता शैक्षिक–प्रक्रिया में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि संस्कृति व्यक्ति के ज्ञान, उस ज्ञान को अर्जित करने के रास्तों एवं उस ज्ञान को पाकर उसे समाज में क्या भूमिका निभानी है को स्पष्ट रूप से प्रभावित करती है। संस्कृति एवं शिक्षा के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए अनेक अध्ययन हुए जिसमें विभिन्न विद्वानों ने विद्यालयों में बच्चों के सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश को महत्त्व देने की बात कही है। डेलपिट, 1992[4] अपने लेख में ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत करती है जो बच्चों के घर की संस्कृति एवं स्कूल की संस्कृति में उपस्थित विरोधाभास को उजागर करते हैं। इन उदाहरणों के माध्यम से वे स्पष्ट करती है कि अगर विद्यालयों एवं शिक्षकों के द्वारा बच्चों के सांस्कृतिक परिवेश को समझने का प्रयास नहीं किया जाता है तो छात्रों में अस्मिता द्वन्द्व व संकट के साथ आत्मविश्वास की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ने की संभावना अधिक हो सकती है। हॅर्नानडेज, 1989 का भी मानना है कि शिक्षण एक अन्तर्सांस्कृतिक प्रक्रिया है उनके अनुसार सभी बच्चों एवं शिक्षको का एक सांस्कृतिक परिवेश होता है, उनके अपने कुछ मूल्य, रीति–रिवाज़, दृष्टिकोण, व्यवहार एवं पूर्वाग्रह हो सकते हैं। ये सांस्कृतिक पक्ष शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं इनका विद्यार्थियों के व्यवहारों व शिक्षण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जातीयता, जेंडर, भाषा व नस्ल का किसी भी व्यक्ति की स्कूल में उपलब्धि व स्कूल के प्रति उसके नजरिये पर प्रभाव पड़ सकता है।

डेलपिट व हॅर्नानडेज के अलावा अन्य बहुत से शिक्षाविद् एवं विद्वान् जैसे– बैंक, गे, शीट भी शिक्षा व सांस्कृतिक विविधता के बीच गहरा सम्बन्ध रखते हैं एवं शिक्षा को छात्रों के सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ने के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा को एक उपाय के रूप में सुझाते हैं। बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक ऐसा उपागम है जिसमें सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से भिन्न छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सबको समान एकादमिक अवसर उपलब्ध कराने पर जोर दिया जाता है, इस प्रकार बहुसांस्कृतिक शिक्षा सामाजिक, न्याय एवं लोकतान्त्रिकता की भावना में वृद्धि करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यद्यपि विभिन्न विद्वान् शिक्षा एवं सांस्कृतिक विविधता के सम्बन्धों को शैक्षिक प्रक्रियाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं लेकिन फिर भी बहुसांस्कृतिक शिक्षा के स्वरूप व परिभाषा को लेकर विभिन्न विद्वानों में कोई एकमतता नहीं है, बहुसांस्कृतिक शिक्षा के विचार

को अलग–अलग विद्वानों ने अलग–अलग रूप में देखा है इसका प्रमुख कारण मानव समाज में उपलब्ध विविधता है इसी विविधता के कारण कोई एक सर्वमान्य परिभाषा दे पाना संभव नहीं है। लेकिन फिर भी बैंक के द्वारा प्रस्तुत परिभाषा हमें बहुसांस्कृतिक शिक्षा के स्वरूप व अवधारणा को समझने में मदद करती है।

"बहुसांस्कृतिक शिक्षा एक विचार एक आन्दोलन एवं एक शैक्षिक सुधार की प्रक्रिया है जिसका मुख्य उद्देश्य शैक्षिक संस्थाओं के ढाँचे में इस प्रकार परिवर्तन करना है जिससे कि विभिन्न जातीय, नस्लीय, जेंडर व सांस्कृतिक समूहों से सम्बन्धित छात्रों को स्कूल में अकादमिक रूप से समान उपलब्धि अर्जित करने के अवसर प्राप्त हो सकें।" (बैंक 1993, पृष्ठ 1)

## बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लक्ष्य

रामसे 1987 बहुसांस्कृतिक शिक्षा के तीन प्रमुख लक्ष्य बताए हैं उनके अनुसार बहुसांस्कृतिक शिक्षा का पहला लक्ष्य बच्चों में सकारात्मक रूप से व्यक्तिगत जेंडर, नस्ल, वर्ग व संस्कृति से सम्बन्धित अस्मिता के निर्माण के साथ–साथ विभिन्न समूहों में उनकी पहचान व इज्जत बनाना है। दूसरा लक्ष्य ऐसे सामाजिक सम्बन्धों का विकास करना है जिसमें दूसरों के प्रति एक रुचि, स्वीकृति व सहयोग की भावना हो। उनके अनुसार बहुसांस्कृतिक शिक्षा का तीसरा उद्देश्य बच्चों की अपने परिवेश के स्वायत्त व आलोचकनात्मक समीक्षक बनने में मदद करना है। (रामसे 1987, पृष्ठ 3–4)

रामसे जहाँ बहुसांस्कृतिक शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बच्चों में विविध सांस्कृतिक परिवेश में रहने के लिए आवश्यक गुणों व लक्षणों का विकास करना मानती है वहीं दूसरी और बैंक शैक्षिक संस्थाओं के ढाँचे में सुधार करना बहुसांस्कृतिक शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य मानते हैं उनके अनुसार "बहुसांस्कृतिक शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के ढाँचे में इस तरह परिवर्तन करना है जिससे कि विविध समूहों के विद्यार्थियों को अधिगम के समान अवसर प्राप्त हो सकें।" (बैंक 2009, पृष्ठ 13)[2]

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए वे स्कूल को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखने पर बल देते हैं।

## बहुसांस्कृतिक शिक्षा के पक्ष

बहुसांस्कृतिक शिक्षा को विद्यालयों में सही प्रकार से अपनाने एवं अध्यापकों, शोधार्थियों व शिक्षाविदों में इसकी अवधारणाओं, प्रत्ययों व सिद्धान्तों का सही व समुचित विकसित करने के उद्देश्य से बैंक ने बहुसांस्कृतिक शिक्षा से सम्बन्धित पाँच महत्त्वपूर्ण पक्षों को प्रस्तावित किया किसी भी अध्यापक को बहुसांस्कृतिक शिक्षा की गहन समझ बनाने के लिए इन पाँचों पक्षों को समझना जरूरी है।

### कन्टेन्स इन्टीग्रेसन

बैंक द्वारा प्रस्तावित पाँच पक्षों में से पहला पक्ष है। यह पक्ष इस बात पर बल देता है कि स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु में विभिन्न संस्कृतियों का समुचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए। पाठ्यचर्या में पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु में विभिन्न समूह, समाजों एवं संस्कृतियों का उचित प्रतिनिधित्व होने से इन समूहों के बच्चें उससे एक जुड़ाव महसूस करते हैं एवं उनमें अधिगम के प्रति एक सकारात्मक रवैया उत्पन्न होता है।

### नालेज कन्सट्रक्शन

बैंक द्वारा प्रस्तावित दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है इस पक्ष की विशेषता यह है कि इसमें अध्यापक शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को यह समझाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार शोधकर्त्ताओं व लेखकों की सांस्कृतिक अवधारणाएँ, सन्दर्भ व परिप्रेक्ष्य ज्ञान सर्जन की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं। यह पक्ष अध्यापकों एवं छात्रों के ज्ञान को देखने के नजरियें में परिवर्तन की बात करता है एवं ज्ञान का उपभोक्ता के स्थान पर उसका उत्पादक बनने के लिए प्रेरित करता है।

### इक्विटी पेडॉगाजी

इस पक्ष में अध्यापक द्वारा अपना शैक्षणिक विधियों एवं रणनीतियों में इस प्रकार बदलाव लाने पर जोर दिया जाता है जिससे कि कक्षा में उपलब्ध सांस्कृतिक नस्लीय, जातीय रूप से विविध छात्रों को अपनी अकादमिक उपलब्धि को बढ़ाने के समान अवसर मिल सकें। इसके लिए अध्यापकों को अपनी कक्षा में छात्र–छात्राओं की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षण–शैलियों एवं उपागमों को अपनाना होता है।

### प्रेजुडिश रिडक्शन

छात्रों की नस्लीय अभिवृत्तियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है एवं शिक्षक पद्धतियाँ एवं सामग्री के माध्यम से अध्यापकों को विद्यार्थियों के दूसरे विद्याथियों के प्रति उत्पन्न होने वाले नस्लीय व जातीय पूर्वाग्रहों एवं पक्षपात पूर्ण व्यवहारों को बदलने में मदद करता है।

### इन्पार्विंग स्कूल स्ट्रक्चर

बहुसांस्कृतिक शिक्षा का अन्तिम पक्ष है जिसमें शिक्षक व छात्र विशेष के व्यवहार को न बदलकर स्कूल की सम्पूर्ण संरचना में बदलाव पर बल दिया जाता है। इसमें विभिन्न समूहों के बीच सम्बन्धों में गुणात्मक बदलाव की बात की जाती है जिससे कि इन समूहों के सम्बन्ध पारस्परिक समानता व सम्मान की भावना पर आधारित हो सके। यह पक्ष विद्यालय के ऐसे लोकतान्त्रिक ढाँचे के निर्माण का पक्षधर है जिसमें विद्यालय की जिम्मेदारी बच्चों के माता–पिता, अध्यापक व स्कूल स्टॉफ मिलकर उठाता हो।" (बैंक 2004,)[1]

बहुसांस्कृतिक शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों को जानने एवं समझने के बाद एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि जो अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा में प्रशिक्षित होंगे एवं शिक्षा व संस्कृति की एक दूसरे पर पारस्परिकता को समझते होंगे वे कभी भी बहुसांस्कृतिकता से भयभीत नहीं होंगे बल्कि इसे एक संसाधन के रूप में स्वीकार कर इसका प्रयोग अपने दिशानिर्देशों को उन्नत करने में करेंगे। ऐसा तभी संभव है जब प्रत्येक शिक्षक अपनी कक्षा में उपस्थित विभिन्न वर्गों व समूहों के बच्चों अपनी बा9त खुलकर व स्वतन्त्रता से रखने के अवसर प्रदान करें ताकि बच्चे अपनी संस्कृति के प्रति सुरक्षा व दूसरों की संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित कर सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति तभी हो सकती है जब शिक्षकों की ट्रेनिंग के दौरान उन्हें बहुसांस्कृतिक के सैद्धान्तिक व व्यवहारिक पक्षों से भली–भाँति अवगत कराया जाए क्योंकि प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया में इसका विशेष महत्त्व है। "एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका को समझना आवश्यक है।" (शीट 2009, पृष्ठ 11)

ऐसा ही विचार हमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में देखने को मिलता है – "बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। हमारे स्कूल आज भी सभी बच्चे को ऐसा महसूस नहीं करवा पाते हैं.... आज यह आवश्यक है कि हमारे बच्चे यह महसूस कर सके कि वे सभी, उनका घर, उनका समुदाय, उनकी भाषा और संस्कृति महत्त्वपूर्ण है।"

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 स्कूलों में विभिन्न वर्गों एवं समूहों की बढ़ती हुई संख्या को ध्यान में रखते हुए नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर ऐजुकेशन 2009 भी अध्यापक शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बहुसांस्कृतिक शिक्षा के महत्त्व को गंभीरता से देखता है और अध्यापक शिक्षा की ऐसी रूपरेखा प्रस्तुत करता है जो वर्तमान समय की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

"शिक्षण–अधिगम के पुर्नजीवन के लिए सामाजिक परिवेश रूपी संसाधन की योग्यता एवं क्षमता की पहचान बढ़ी है। विविधता के लिए बहुसांस्कृतिक शिक्षा एवं शिक्षण आज के समय की माँग है।" (नेशनन करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर ऐजुकेशन 2009, पृष्ठ 19)[7]

विभिन्न शैक्षिक दस्तावेजों में संस्कृति व शिक्षा की इस परस्पर निर्भरता एवं घनिष्ठता को देखते हुए मेरे मन में छात्र अध्यापकों का इस विषय को लेकर किस तरह का दृष्टिकोण है यह जानने की इच्छा उत्पन्न हुई और जब मुझे मेरे एम.फिल. के कोर्स वर्क में एक टर्म पेपर लिखने का अवसर मिला तो मैंने इसी विषय पर एक छोटा सा अन्वेषणात्मक अध्ययन करने की सोची इस अध्ययन के पीछे मेरा उद्देश्य इस प्रकार था –

## शोध उद्देश्य

छात्र–अध्यापकों से बहुसांस्कृतिकता एवं शिक्षा के सम्बन्ध में उनके दृष्टिकोण को जानना।

## शोध प्रश्न

छात्र–अध्यापकों की शिक्षा एवं सांस्कृतिक विविधता को लेकर किस प्रकार की समझ है यह जानना?

बी.एड. पाठ्यक्रम ने उनकी शिक्षा एवं सांस्कृतिक विविधता से सम्बन्धित समझ को किस प्रकार प्रभावित किया है यह जानना?

## प्रतिदर्श एवं विश्लेषण

इस अध्ययन को करने के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श का सहारा लिया गया। प्रतिदर्श का उद्देश्यपूर्ण इस कारण किया गया क्योंकि मैं इस अध्ययन में शिक्षा एवं सांस्कृतिक के प्रति छात्र–अध्यापकों की समझ उनकी अब तक की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कैसी रही है, इस आधार पर भी देखना चाहती थी इसलिए मैंने इस अध्ययन के लिए दो प्रतिभागी ऐसे चुने जिन्होंने विभिन्न कारणों से विविध सांस्कृतिक परिवेश में अपनी शिक्षा ग्रहण की थी एवं दो प्रतिभागी ऐसे चुने जिनकी सम्पूर्ण शिक्षा लगभग एक जैसे सांस्कृतिक परिवेश में हुई थी।

प्रतिदर्श का चयन करने के बाद प्रतिभागियों का असंरचनात्मक साक्षात्कार लिया गया एवं इस साक्षात्कार में उनके बहुसांस्कृतिकता व शिक्षा को लेकर किस प्रकार के दृष्टिकोण है यह जानने का प्रयास किया। साक्षात्कार में विभिन्न प्रतिभागियों के जो विचार उभरकर आये उनका गुणात्मक आधार पर विश्लेषण किया गया और अंत में प्राप्तियों के रूप में उसे प्रस्तुत किया गया।

## प्राप्तियाँ

इस शोध अध्ययन में चार छात्र–अध्यापकों से बहुसांस्कृतिकता एवं शिक्षा के सम्बन्ध करने पर पता चला कि सभी छात्र–अध्यापक शिक्षा में संस्कृति की भूमिका को महत्त्वपूर्ण मानते हैं उन सभी का मानना था कि प्रत्येक अध्यापक को अपनी कक्षा में उपलब्ध सांस्कृतिक व सामाजिक विविधता को एक संसाधन के रूप में स्वीकार करना चाहिए न कि किसी बाधा के रूप में। यदि अध्यापक अपनी कक्षा में उपलब्ध विविध समूहों के छात्रों को उनकी सांस्कृतिक विविधता के साथ स्वीकार करता है तो इससे एक और जहाँ सामाजिक सम्बन्ध में वृद्धि होगी वही दूसरी और वे एक लोकतान्त्रिक नागरिक भी सकेगें।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जहाँ एक और सभी छात्र अध्यापक बहुसांस्कृतिकता को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए लाभदायक व उपयोगी मानते हैं वही दूसरी और वे इसे एक अध्यापन के लिए चुनौती के रूप में भी देखते हैं उनके अनुसार सांस्कृतिक रूप से विविध कक्षा का प्रबंधन करना एवं सभी छात्र–छात्राओं को समान अवसर प्रदान करना शिक्षक के लिए आसान कार्य नहीं है।

इस अध्ययन में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों का मानना था कि बी. एड. के पाठ्यक्रम करने से न केवल सांस्कृतिक विविधता बल्कि कक्षा में उपलब्ध सभी प्रकार की विविधता के प्रति उनकी सोच बदली है एवं विकसित हुई है बी.एड. में उन्हें अलग–अलग विषयों में जेंडर, भाषा, जाति, वर्ग, स्थिति कैसे बच्चों की सीखने व अध्यापकों के पठाने को प्रभावित कर सकते हैं इसकी सैद्धान्तिक समझ विकसित हुई। दो पुरुष प्रतिभागियों का स्पष्ट रूप से मानता था कि बी.एड. पाठ्यक्रम ने उनका जेंडर एवं महिलाओं को देखने का नजरिया काफी बदला है। बी.एड. पाठ्यक्रम में इन छात्र–अध्यापकों, स्कूलों एवं अमर ज्योति जैसी संस्थाओं में अवलोकन करने का अवसर मिला जिससे वे समावेशन एवं विविधता को लेकर और अधिक संवेदनशील हो सकें।

## निष्कर्ष

इस अध्ययन का करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस अध्ययन में सम्मिलित सभी छात्र–अध्यापक बहुसांस्कृतिक शिक्षा को एक संसाधन के रूप में देखते हैं न कि बाधा के रूप में हालाँकि इस विचार की व्यवहारिकता को लेकर वे कुछ आशंकित है क्योंकि भारत जैसे जटिल विविधताओं वाले देश में बहुसांस्कृतिकता की अवधारणा को समझना एवं इस पर कार्य करना इतना आसान कार्य नहीं है। यद्यपि बी.एड. पाठ्यक्रम में इस विषय पर छात्रों की सैद्धान्तिक व व्यवहारिक समझ बनाने के लिए सार्थक प्रयास किये जाते हैं लेकिन उन्हें सामान्य रूप इस विषय की जटिलताओं एवं तकनीकियों से अवगत कराने के लिए कोई विशेष अध्ययन सामग्री उपलब्ध नहीं कराई जाती है। इसका कारण शायद यह हो सकता है कि भारत में बहुसांस्कृतिकता एवं बहुसांस्कृतिकवाद भारतीय समाज का एक अभिन्न व सामान्य लक्षण माना जाता है जिसकी अभिव्यक्ति सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में होना लाजिमी है अतः शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का मुख्य उद्देश्य छात्र–अध्यापकों को इस अभिव्यक्ति की स्वीकृति व पहचान करने के लिए तैयार करना होता है न कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा सैद्धान्तिक समझ विकसित करना।

## References


1. Banks JA. Multicultural Eduction: Historical Development, Dimensions and Pracitce. In I.A. Banks & C.A.M. Banks (Eds.), Hand 6001 of Research on Multicultural Education (2nd Ed.) San Francisco: Jossey-Ball, 2004.
2. Banks JA. Multicultural Education: Dimensions and Paradigms. In J.A. Banks (Eds). The Routledge International Companion to Multicultural Eduction (pp. 13). London 8, New York: Routledge, 2009.
3. Baruth Leroy G, Mamning M Le. Multicultural Education of Children and Adolescents. U.S. Alan and Bacon, 1993.
4. Delpit Lisa D. Education in Multicultural Society: Our Future Greatest Challenges Journal of Negro Education. 1992; 6(3):237-249.
5. Hernandez H. Multicultural Education: A Teacher Guide to Content and Process. Columbus: Merrill, 1989.

6. NCERT. National Curriculum Framwork, New Delhi, 2005.
7. NCTE. National Curriculum Framework for Teacher Education: Toward Preparing Professional and Humane Teacher, 2009. From www.ncte-india.org/ publicnotice /NCFTE2010.php.
8. Joshee R, Sihra K. Religion, Culture, Language and Education in India. In J.A. Banks (Eds.). The Routledge Companion to Multicultural Education. London & New York: Routledge. 2009, 425-435.
9. Sheets RH. What is Diversity Pedagogy, 2009.